नन्द घर आनन्द भयों ....

नन्द घर आनन्द भयो, जै कन्हैया लाल की ।।
हाथी दीन्हें घोड़ा दीन्हें, और दीन्ही पालकी।।
रतन दीन्हें हार दीन्हें, गैय्या ब्याई हालकी।।
कंठा दीन्हें कंठूला दीन्हें, दीन्हीं मुक्ता मालकी।।
कड़े दीन्हें छड़े दीन्हें, बिन्दी दीन्ही भालकी।।
सुरमा दीये दर्पण दीये, कंघी दीन्हीं बालकी।।
जै यशोदालाल की, जै दाऊलालकी, जै बोलो गोपाल की।।

ओढ़ चुनड़ मैं तो गई सत्संग में ....

ओढ़ चुनड़ मैं तो गई रे सत्संग में।
सांवरियों रंगाई म्हाने गैरा गैरा रंग में ।।टेर।।

सोच रही मन में समझ रही मन में ।
थारों म्हारों ब्याव हुवेलों सत्संग में ।।1।।

संत की संगत म्हारा गरूसा पधार्‌या।
सुन–सुन ज्ञान, हुई रे मगन मैं ।।2।।

संत की संगत म्हारा रामजी पधार्‌या।
कर–कर दर्शन हुई रे मगन मैं ।।3।।

संत की संगत म्हारी सहेलियां भी आई।
तो गाय–गाय हरिगुण हुई रे मगन मैं ।।4।।

संत की संगत मांय अमृत बरसे।
तो पीव–पीव प्याला हुई रे मगन मैं ।।5।।